www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रस्तुत अर्थ-संकट का सरल समाधान

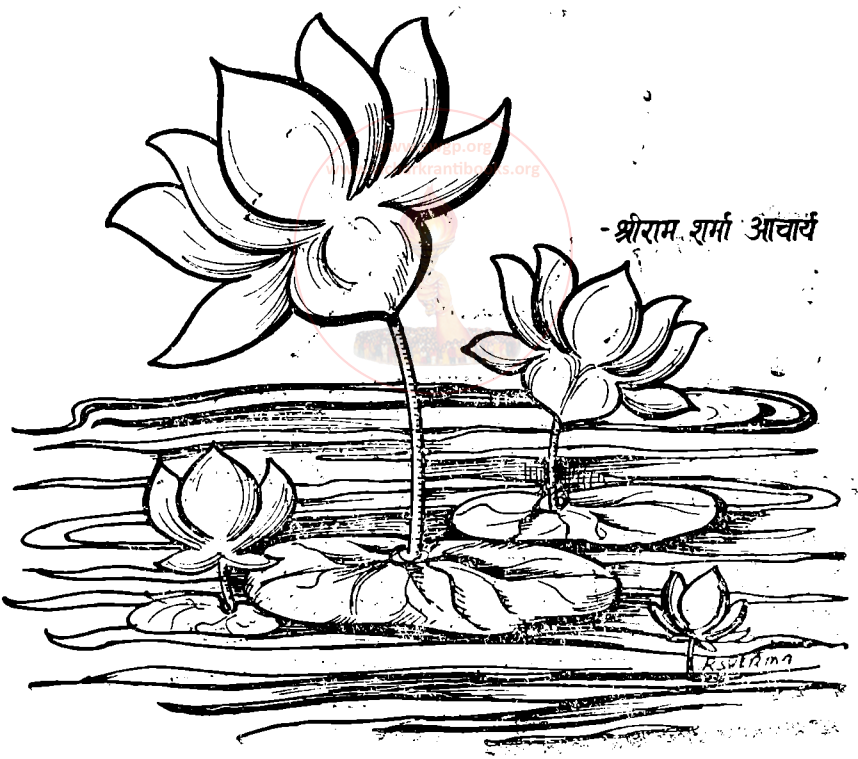

-श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रस्तुत अर्थ संकट का सरल समाधान

यों स्वास्थ्य का महत्व सर्वोपरि है। पर उससे भी अधिक चिन्ता इन दिनों पैसे की रहती है। लोग उसे अधिकाधिक मात्रा में बटोरना और उड़ाना चाहते हैं। पर उस कामना की पूर्ति में अनेक बाधायें हैं। उनके रहते यह बन नहीं पड़ता कि जितनी मात्रा में अर्जन करने का मन है उतनी उपलब्धि सम्भव हो सके। अतएव ललक के अनुपात से उद्विग्नता भी अधिक होती है। फलतः आर्थिक तङ्गी की शिकायत और बेचैनी हर किसी को बनी रहती है। इस अस्त-व्यस्तता के रहते न भौतिक क्षेत्र के किन्ही प्रयासो में प्रगति होती है और न आत्मिक क्षेत्र में कुछ ऐसा बन पड़ता है जिसे संतोष जनक कहा जा सकें।

देखा यह जाना चाहिए कि घुस पड़ने और फिर निकल न सकने का यह कुचक्र आखिर बन कैसे पड़ा? लगता है भ्रान्तियों का घटाटोप ही इस व्यामोह का कारण है। अन्यथा धन का तात्पर्य यदि निर्वाह साधनों को जुटाने से हो तो मनुष्य जैसे बुद्धिमान प्राणी को वैसी कठिनाई नहीं होनी चाहिऐ।

सृष्टि में उतने ही साधन उपजते हैं जितनी कि उस समय के प्राणियों की अनिवार्य आवश्यकता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए देखा यह जाना है कि कहीं हमने आवश्यकता ही तो इतनी नहीं बढ़ा ली जितनी पूर्ति हो सके अथवा उपार्जन क्षमता को कुंठित तो नहीं कर लिया। यह भी हो सकता है कि दोनों स्थिति यथास्थान रह रही हों पर उनके बीच तालमेल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बिठाने की कला से वंचित रहना पड़ रहा है। जो हो हमें निराकरण की बात सोचनी चाहिए ताकि निर्वाह भी ठीक प्रकार चल सके और उपार्जन से भी अधिक महत्वपूर्ण कामों में धन लग सके और समय लग सके।

अधिक उपार्जन में हर्ज नहीं। सदुपयोग के लिए यदि कमाया गया है तो उसमें कर्त्ता को श्रेय और विश्व व्यवस्था में योगदान मिलता है। पर उसके लिए आकाश से हुण्डी बरसने या जमीन में से सोने के घड़े निकलने जैसी ललकें नहीं जगानी चाहिए इसके लिए बेचैन लोगों को उतावली में अपराधी प्रवृत्तियाँ अपनानी पड़ती हैं या फिर खीज में अनेकानेक व्यथायें पाल लेने से धीमी आत्महत्या करनी पड़ती है। अच्छा हो धन के सम्बन्ध में अपना दृष्टिकोण परिमार्जित किया जाय और तदनुरूप सन्तुलन बिठाया जाय।

न धन को अस्पर्श्य माना जाना चाहिए और न उसमें निमग्न रहना चाहिए। अति का ही सर्वत्र वर्जन है। संतुलन और समन्वय की सदा सराहना होती रही है। अर्थ उपार्जन भी स्वास्थ्य सम्बर्धन-शिक्षा विस्तार की तरह आवश्यक है। वस्तुओं का उत्पादन उचित है। वे अपने या दूसरों के काम आती हैं तो अभाव दूर होते हैं। जिनके पास बहुलता है उन्हें भी उत्पादन से हाथ नहीं रोकना चाहिए। अपने पास पेट भरने को है तो अन्य सभी की तो वैसी स्थिति नहीं है। साधन बढ़ेंगे तो किसी न किसी के काम आयेंगे। इसलिए सुसम्पन्नों को भी उत्पादनरत रहने के लिए कहा गया है। संतोष उत्पादन में नहीं उपभोग में भी किया जाना चाहिए।

जिनके बच्चे कमाने योग्य हो गये, जिन्हें पेंशन मिलती है। निजी निर्वाह के लिए कमी नहीं पड़ती उन्हें भी आलसी अकर्मन्यों की तरह खाली नहीं बैठना चाहिए। ऐसा करने से उनकी शारीरिक मानसिक क्षमता घटेगी और जिस प्रकार पड़े रहने वाले लोहे को जंग खा जाती है, उसी प्रकार आराम तलबी आदमी को गलाती, घुलाती और बेमौत मारती है। पुण्य परमार्थ में जिनकी रूचि नहीं है—जिन्हें लोक मंगल में रूचि लेने जैसी भाव-संवेदना का सौभाग्य वरदान उपलब्ध नहीं हुआ है उन्हें कम से कम उपयोगी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उत्पादन बढ़ाने के लिए तो श्रम संलग्न रहना ही चाहिए। निठल्लापन, अपने लिए कुटुम्बियों के लिए ही नहीं समूचे समाज के लिए अभिशाप है। जब तक मनुष्य में सामर्थ्य है तब तक उसे उपयोगी प्रयत्नों में संलग्न रहकर अपनी क्षमताको समय से पहले ही कुंठित नहीं करना चाहिए।

मनोरंजन और व्यायाम के लिए उपयोगी श्रम का चयन करना चाहिए। विनोबा बागवानी को सर्वोत्तम व्यायाम कहते थे। घरेलू शाक वाटिका जैसे कामों में श्रम संलग्न रहकर समूचे परिवार को व्यायाम, मनोरंजन, उत्पादन एवं कौशल संवर्धन का चतुर्विधि लाभ मिल सकता है। संत साहित्यकार, बुद्धिजीवी, अधिकारी स्तर के व्यक्ति भी ऐसाउत्पादक श्रम अपनी दिन चर्या में सम्मिलित रखें तो उनका शरीर और मन समन्वित श्रम से लाभान्वित होता रहेगा। श्रम करने में इन दिनों हेटी समझने की जो दुष्प्रवृत्ति चल पड़ी है उसका निवारण इसी प्रकार सम्भव होगा। गाँधीजी ने चर्खा तकली का शारीरिक श्रम अपने समय में हर देश भक्त को अपनाने का भावभरा आग्रह किया था। इसमें आर्थिक कम और मनोवैज्ञानिक लाभ अधिक था। श्रम के प्रति सम्मान और आलस्य में एक क्षण भी न बिताने की सत्प्रवृत्ति को पुनर्जीवित करने में राष्ट्र का समग्र उत्कर्ष सोचा गया था। स्वदेशी का भाव भी उसमें था। गृह उद्योगों को प्रोत्साहन भी। संक्षेप में उत्पादक शरीर श्रम की जितनी प्रतिष्ठा हो, उतनी ही कम है। उस प्रचलन को एक सत्परम्परा के रूप में अपनाया जाना चाहिए।

सर्वजनीन सुविधा सम्वर्धन की दृष्टि से अधिकाधिक उत्पादन के लिए किये गये प्रयासों की सराहना की जायेगी। किन्तु उसमें अनौचित्य का समावेश नहीं होना चाहिए। ऐसी वस्तुओं का उत्पादन नहीं किया जाना चाहिए जो मनुष्य को दुर्बल बनातीं–नीचे गिरातीं हैं। मादक द्रव्यों का उत्पादन ऐसा ही है। उससे उत्पादकों को भले ही लाभ मिलताहो किन्तु उपभोक्ता घाटे में ही रहते हैं। इसी प्रकार अनीति उपार्जन से भी बचना चाहिए। चोरी, चालाकी, बेईमानी, छल प्रपंच, मिलावट के सहारे अधिक पैसा कमाने की नीयत बुरी है। जो कमाया जाय बिशुद्ध श्रम उपार्जित हो। जुआ, सट्टा,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लाटरी ही नहीं, दहेज अनाधिकार में मिलने वाली मुफ्त की कमाई भी अग्राह्य है। इन्हें भी अनीति उपार्जन में सम्मिलित किया जायेगा। मुनाफाखोरी कर चोरी भी अनौचित्य में सम्मिलित होती है। भले ही उसे व्यवसाय क्षेत्र में आम प्रचलन जैसी मान्यता मिल रही हो।

अधिक कमाने की ललक जिन्हें है, जो उस क्षेत्र में अपनी वरिष्ठता सिद्ध करने के इच्छुक हैं। उन्हें भी हतोत्साहित करने की आवश्यकता नहीं है। तद् विषयक योग्यता की निरन्तर अभिवृद्धि, मनोयोग पूर्वक कठिन श्रम करने की आदत, कृत्य को प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर उसे श्रेष्ठतम स्तर का बनाने की प्रवृति के सहारे हर काम का मूल्य बढ़ता है। कर्त्ता का वर्चस्व निखरता है। फलतः उसके द्वारा किये जाने वाले कृत्यों को सम्मान ही नहीं मूल्य भी अधिक मिलता है। उपार्जन क्षेत्र में सफल प्रतिभायें चिरस्थाई प्रगति इसी आधार पर कर सकी हैं। यों दाव घात तो चोर जुआरी भी कभी-कभी लगाते और चुटकी बजाते बहुत बटोर लेने पर मूँछें ऐंठते देखे गये हैं।

सम्पन्नता का दूसरा पक्ष है मितव्यता, धन कमाना, उसे मात्र सदुपयोग भर में प्रयुक्त करना और महत्वपूर्ण कार्यों के लिए बचाते रहना भी एक अर्थकौशल है। छोटा छेद कर देने पर तेल भरी टंकी भी खाली हो जाती है। कोई कमाता कितना ही क्यों न हो पर यदि अपव्यय की आदत है तो सदा तङ्गी सहनी पड़ेगी और कर्ज लेने से लेकर चोरी करने जैसी दुर्नीति अपनानी पड़ेगी। लक्ष्मी इन्हीं के यहाँ ठहरती है, जो एक-एक पैसे को नितान्त आवश्यक कार्यों में बजट बनाकर खर्च करते हैं। पैसे को जेब में भरे फिरने वाले और बेतुकी वस्तुयें खरीदने में परहेज न करने वाले लोग कमाऊ होने पर भी हाथ में बरकत न होने की शिकायत करते और तङ्गी पड़ने के चित्र विचित्र कारण बताते रहते हैं। कितने ही समझदार लोग कम आजीविका में भी अपने परिवार का सज्जनोचित निर्वाह कर लेते हैं। न किसी के आगे हाथ पसारते और न तङ्गी की फरियाद करते हैं। 'तेते पैर पसारिये जेती लम्बी ठौर' का गुरुमंत्र ही उन्हें सन्तुलन बिठाकर सीमित खर्च करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की कला सिखाता है और उस जादू के सहारे कम आजीविका होने पर भी भले मनुष्यों जैसा जीवन जीते हैं ।

बात वहाँ अड़ती है जहाँ आजीविका को खर्च करने का अवसर आता है । अधिकाँश लोग चटोरेपन और सज-धज बनाने की कुटेव अपनाकर निरर्थक प्रयोजनों में पैसा पानी की तरह बहाते रहते हैं । यदि नितान्त आवश्यक खर्चों की सूची बनाई जाय तो वे इतनी कम होंगी कि उन्हें बिना किसी कठिनाई के पूरा किया जा सके । अधिकाँश भार तो अपव्यय का लदा होता है । बिवाह शादियों, चाय पार्टियों, अन्ध विश्वासों में भारतीय समुदाय की प्रायः एक तिहाई आमदनी फुलझड़ी की तरह जलती रहती है । थोड़ी सी समझदारी अपनाई जा सके और कुरीतियों का दवाव मानने से इन्कार किया जा सके तो दरिद्रता का त्रास सहते रहने का सङ्कट बहुत कुछ अनायास ही टल सकेगा ।

घर के समर्थ लोगों में से प्रत्येक को कुछ उत्पादक श्रम करने की आदत डालनी और अपनी राह स्वयं बनानी चाहिए । शारीरिक श्रम करने में, कमा कर खाने में हर किसी को गर्व गौरव अनुभव होना चाहिए । इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि अपने देश में कामचोर, हरामखोर कहलाने वाला वर्ग दिन-दिन बढ़ता जाता है । श्रमिकों को भाग्यहीन और हरामीको भाग्यवान कहा जाता है । पसीना बहाकर रोटी कमाने वाले छोटे समझे जाते हैं और आराम तलवी में बैठे ठाले दिन काटने वाले बड़े आदमियों में गिने जाते हैं । शादी करते समय देखा जाता है कि लड़की को काम तो नहीं करना पड़ेगा । नौकर सारा काम धाम करने को मिलेगा या नहीं । यह बहुत ही बुरी मान्यता है । नर हो या नारी जो भी शारीरिक श्रम से बचता रहेगा उसकी वैसी ही दुर्गति होगी जैसी कि धूप हवा से दूर रहकर बन्द कोठरियों में रहने वालों की होती है ।

घर मालिक कमाया करे और सब बैठे-बैठे खाया करें यह बहुत ही बुरा प्रचलन है । इससे शारीरिक और मानसिक अपङ्गता समूचे परिवार पर चढ़ती है । आर्थिक तङ्गी बढ़ती है । और ठाली लोगों को जिन दुर्गुणों से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ग्रसित पाया जाता है वे सब इकट्ठे होकर अपने ही परिवार पर आ धमकते हैं। अच्छा यही है छोटे बालकों और असमर्थ बुड्ढों को छोड़कर अन्य सभी लोग कुछ न कुछ कमाते रहने की बात सोचें और खाली समय को इस प्रयोजन के लिए लगाया करें। हर क्षेत्र में कोई न कोई गृह उद्योग हो सकता है। 'बैठे से बेगार भली' की उक्ति के अनुसार खाली समयमें कम आजीविका देने वाले रोजगार करने में भी हर्ज नहीं। राजा तक हल चलाते और खेती करते थे। बादशाह नासिरुद्दीन टोपी सीकर गुजारा करते थे। कबीर कपड़ा बुनते, रैदास जूते बनाते, नामदेव कपड़े सीते थे। इस श्रम उपार्जन से उनके बड़प्पन में कोई कमी नहीं पड़ी। चरखे को अपनाकर ही गाँधी युग गौरवान्वित हुआ।

उत्पादक श्रम में बचत करने वाली प्रक्रिया भी सम्मिलित होती है। चक्की पीसने, शाक वाटिका उगाने, कपड़े धोने, सिलाई करने, टूट-फूट की मरम्मत करने, ट्यूशन की आवश्यकता मिल-जुलकर पूरी करने, हजामत बनाने जैसे कार्यों से घर का पैसा बाहर जाने से बचता है। जहाँ पशुपालन सम्भव हो वहां वह भी एक सहायक गृह उद्योग हो सकता है। कृषि और कपड़ा बनाने का उद्योग भी जिसमें परिवार के सभी छोटे बड़े सदस्य किसी न किसी रूप में श्रमरत रहते और सबके संयुक्त प्रयास से उस समुदाय के परिवार हँसते-खेलते और फलते-फूलते रहते हैं। श्रमजीवियों के घर में बीमारियां कम से कम फटकती हैं तथा दवादारू में खर्च करने तथा तीमारदारी में समय लगाने की नहीं के बराबर आवश्यकता पड़ती है।

जेवर बेचकर बैंक में जमा कर दिया जाय तो ब्याज मिलेगा और पैसा बढ़ेगा जबकि जेवर घिसते और टूटते-फूटते रहकर दिन-दिन अपना मूल्य घटाते चले जाते हैं। पैसे को रोक कर रखने की अपेक्षा उसे व्यवसाय या ब्याज पर लगाना अधिक उपयुक्त है। जिन लोगों के पास अनावश्यक सम्पत्ति है उन्हें उससे स्थान घेरने और सुरक्षा का झंझट उठाने की अपेक्षा किसी उत्पादक कार्य में लगा देना ही बुद्धिमानी है।

पान-सिगरेट जैसे दुर्व्यसन स्वास्थ्य को खराब करते, आदत बिगाड़ते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

-www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और ढेरों पैसों की बर्बादी करते हैं। इनके बिना आसानी से काम चल सकता है। जो इन लतों में फँस चुके हैं वे उन्हें छोड़ सकते हैं जिन्हें इनके चंगुल में अभी नहीं फँसना पड़ा वे समय रहते उससे सजग हो सकते हैं।

अनावश्यक अपव्यय की आदत अपने समय का एक बुरा प्रचलन है। आंखें मूँदकर सन्तान की संख्या बढ़ाते जाना, यह दरिद्रता को निमंत्रण देकर बुलाने के समान है। इस घोर मँहगाई के जमाने में एक नया बच्चा बढ़ा लेने का सीधा-साधा अर्थ है प्रायः सौ रुपये का खर्च महीने में बढ़ा लेना। दूध, आहार, कपड़ा, चिकित्सा, शादी स्वावलम्बन जैसी अनेकानेक जिम्मेदारियों को देखते हुए अनावश्यक प्रजनन अपने डण्डे से अपनी आर्थिक कमर तोड़ डालने के समान है। पत्नी का स्वास्थ्य, बच्चों का भविष्य तथा राष्ट्र की अर्थ व्यवस्था पर भार लादने जैसे इस अविवेक भरे प्रयास में समझदारी का कोई समावेश नहीं। कोई चाहे तो इस भेड़ चाल पर अंकुश लगाकर अपव्यय की एक मूर्खतापूर्ण मद में आसानी से कटौती कर सकता है। तंगी का एक बड़ा मोर्चा जीता जा सकता है।

इन दिनों अर्थ संकट सर्वाधिक उन्हीं को त्रस्त करेगा जो न योग्यता बढ़ाना चाहते हैं और न परिश्रम के अनुपात में कोई वृद्धि करना चाहते हैं अपितु ठाठ-बाट कुरीति प्रचलन और अन्यान्य अपकर्मों को यथावत बनाये रहना चाहते हैं। यदि समूची समस्या पर नये सिरे से विचार किया जा सके और ढर्रे में आवश्यक हेर-फेर बन पड़े तो इस विषम वेला में भी सरल निर्वाह का उपक्रम बन सके, ऐसी बात नहीं है।

★★

क्र०१८। प्र० युग निर्माण योजना, मु० युग निर्माण प्रेस मथुरा। मूल्य ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org